सप्रसंग व्याख्या

1. *कठपुतली*
गुस्से से उबली
बोली–ये धागे
क्यों हैं मेरे पीछे-आगे?
इन्हें तोड़ दो;
मुझे मेरे पाँवों पर छोड़ दो। (पृष्ठ संख्या-19)

<u>शब्दार्थ</u>–*कठपुतली*–धागे से बँधी गुड़िया जिसे अँगुलियों के इशारों पर नचाया जाता है। *गुस्से से उबली*–क्रोधित हो गई। *पाँव पर छोड़ देना*–अपने ऊपर निर्भर होने देना।

<u>प्रसंग</u>–प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'वसंत भाग-2' में संकलित कविता 'कठपुतली' नामक कविता से उद्धृत हैं। रचयिता भवानी प्रसाद मिश्र कठपुतली की भावनाओं का उल्लेख कर रहे हैं।

<u>व्याख्या</u>–कठपुतली बरसों से धागे में बँधी हुई है और दूसरों की ऊँगलियों के इशारों पर नाचती रही है। पराधीनता के इस जीवन से मुक्ति पाने की इच्छा उसके हृदय में उत्पन्न होती है। वह यह सोच कर क्रोधित हो जाती है कि इन धागों ने उसे क्यों जकड़ रखा है। वह कहती है कि इन धागों को तोड़ कर उसे उसके हाल पर छोड़ दिया जाए। वह आत्मनिर्भर होना चाहती है। उसे अपने पैरों पर खड़ा होना है। उसे किसी के इशारों पर नहीं चलना। वह अपनी इच्छानुसार कार्य करना चाहती है।

2. *सुनकर बोलीं और-और*
कठपुतलियाँ कि हाँ,
बहुत दिन हुए
हमें अपने मन के छंद छुए। (पृष्ठ संख्या-19)

<u>शब्दार्थ</u>–*और-और*–दूसरी। *मन के छंद छूना*–मन की बात सुनना।

<u>प्रसंग</u>–उपर्युक्त पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत भाग-2' में संकलित कविता 'कठपुतली' नामक कविता से उद्धृत हैं। इसके रचयिता भवानी प्रसाद मिश्र ने इसमें सभी कठपुतलियों की इच्छा का उल्लेख किया है।

<u>व्याख्या</u>–पहली कठपुतली की बात सुनकर दूसरी कठपुतलियों के मन में भी आजाद होने की इच्छा सर उठाने लगती है। वे भी उसकी हाँ में हाँ मिलाने लगती हैं और कहती हैं कि सचमुच बहुत दिन हो गए, उन्होंने अपने मन की कोई इच्छा पूरी नहीं की। अपनी मन मर्जी से काम करने का उन्हें अवसर नहीं मिला। अतः सभी कठपुतलियाँ विद्रोह के लिए तैयार हो जाती है।

3. *मगर.....*
पहली कठपुतली सोचने लगी–
ये कैसी इच्छा
मेरे मन में जगी? *(पृष्ठ संख्या-19)*

<u>शब्दार्थ</u>–*इच्छा जगना*–चाहत उत्पन्न होना।

<u>प्रसंग</u>–उपर्युक्त पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कविता 'कठपुतली' नामक कविता से ली गई हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने पहली कठपुतली की सोच के विषय में बताया है

<u>व्याख्या</u>–पहली कठपुतली की बात सुनकर जब सभी कठपुतलियाँ आजादी के लिए विद्रोह करने को तैयार हो जाती है, तो पहली कठपुतली सोच में पड़ जाती है। पहले उसने केवल अपनी आजादी के विषय में सोचा था, इसलिए क्रोधित हो गई थी, परंतु अब जब उस पर सारी कठपुतलियों की आजादी की जिम्मेदारी आ गई है तो वह सोच समझ कर कदम उठाना जरूरी समझती है क्योंकि आजाद हो जाना सरल है परंतु आजादी को बनाए रख पाना कठिन है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

कविता से

प्रश्न 1.

कठपुतली को गुस्सा क्यों आया?

उत्तर-

कठपुतली को गुस्सा इसलिए आया क्योंकि उसे सदैव दूसरों के इशारों पर नाचना पड़ता है और वह लंबे अर्से से धागे में बँधी है। वह अपने पाँवों पर खड़ी होकर आत्मनिर्भर बनना चाहती है। धागे में बँधना उसे पराधीनता लगता है, इसीलिए उसे गुस्सा आता है।

प्रश्न 2.

कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है, लेकिन वह क्यों नहीं खड़ी होती?[Imp.]

उत्तर

कठपुतली स्वतंत्र होकर अपने पाँवों पर खड़ी होना चाहती है लेकिन खड़ी नहीं होती क्योंकि जब उस पर सभी कठपुतलियों की स्वतंत्रता की जिम्मेदारी आती है तो वह डर जाती है। उसे ऐसा लगता है कि कहीं उसका उठाया गया कदम सबको मुश्किल में न डाल दे।

प्रश्न 3.

पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगीं?

उत्तर-

पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को बहुत अच्छी लगी, क्योंकि वे भी स्वतंत्र होना चाहती थीं और अपनी पाँव । पर खड़ी होना चाहती थी। अपने मनमर्जी के अनुसार चलना चाहती थीं।

अन्य पाठेतर हल प्रश्न

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

(क) कठपुतली कविता के रचयिता हैं
(i) मैथलीशरण गुप्त
(ii) भवानी प्रसाद मिश्र
(iii) सुमित्रानंदन पंत
(iv) सुभद्रा कुमारी चौहान

(ख) कठपुतली को किस बात का दुख था?
(i) हरदम हँसने का
(ii) दूसरों के इशारे पर नाचने का
(iii) हरदम खेलने का
(iv) हरदम धागा खींचने का।

(ग) कठपुतली के मन में कौन-सी इच्छा जागी?
(i) मस्ती करने की
(ii) खेलने की
(iii) आज़ाद होने की
(iv) नाचने की

(घ) पहली कठपुतली ने दूसरी कठपुतली से क्या कहा?
(i) स्वतंत्र होने के लिए।
(ii) अपने पैरों पर खड़े होने के लिए।

(iii) बंधन से मुक्त होने के लिए 106
(iv) उपर्युक्त सभी

(ङ) कठपुतलियों को किनसे परेशानी थी?
(i) गुस्से से
(ii) पाँवों से
(iii) धागों से
(iv) उपर्युक्त सभी से

(च) कठपुतली ने अपनी इच्छा प्रकट की|
(i) हर्षपूर्वक
(ii) विनम्रतापूर्वक
(iii) क्रोधपूर्वक
(iv) व्यथापूर्वक

(छ) कठपुतली गुस्से से क्यों उबल पड़ी
(i) वह आजाद होना चाहती थी
(ii) वह खेलना चाहती थी
(iii) वह पराधीनता से परेशान थी
(iv) उपर्युक्त सभी

(ज) "पाँवों को छोड़ देने का' को अर्थ है
(i) सहारा देना
(ii) स्वतंत्र कर देना
(iii) आश्रयहीन कर देना
(iv) पैरों से सहारा हटा देना

उत्तर
(क) (ii)
(ख) (ii)
(ग) (iii)
(घ) (iv)
(ङ) (iii)
(च) (iii)
(छ) (iii)
(ज) (ii)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कठपुतली को धागे में क्यों बाँधा जाता है?
उत्तर-
कठपुतली को धागे में इसलिए बाँधा जाता है जाकि उसे अपनी उँगलियों के इशारों पर नचाया जा सकें।

(ख) कठपुतलियाँ किसका प्रतीक हैं?
उत्तर-
कठपुतलियाँ 'आम आदमी' का प्रतीक हैं ताकि वे अपनी मर्जी का जीवन जी सके।

(ग) 'कठपुतली' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?
उत्तर-
'कठपुतली' कविता के माध्यम से कवि संदेश देना चाहता है कि आजादी का हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। पराधीनता व्यक्ति

को व्यथित कर देता है। अतः स्वतंत्र होना और उसे बनाए रखना बहुत जरूरी है, भले ही यह कठिन क्यों न हो।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कठपुतली को गुस्सा क्यों आता है?
उत्तर–
कठपुतली को गुस्सा इसलिए आता हैं क्योंकि उसे चारों ओर से धागों से बंधन में बाँध कर रखा गया था। वह इसे बंधन से तंग आ गई थी। वह आज़ाद होना चाहती थी। वह अपनी इच्छानुसार जीना चाहती थी।

(ख) पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगी?
उत्तर–
अवश्य पहली, कठपुतली की बात सुनकर दूसरी कठपुतलियों को अच्छी लगी होगी। परतंत्र रहना किसी को पसंद नहीं। सभी स्वतंत्र यानी आजाद रहना चाहते हैं। सभी अपने-अपने मर्जी से काम करना चाहते हैं। किसी भी कठपुतली को धागे में बंधे रहना और दूसरों की मर्जी से नाचना पसंद नहीं था। यही कारण था कि पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को अच्छी लगी होगी।

(ग) आपके विचार से किस कठपुतली ने विद्रोह किया?
उत्तर–
हमारे विचार से स्वतंत्रता के लिए सबसे छोटी कठपुतली ने विरोध किया होगा क्योंकि नई पीढ़ी ही सदैव बदलाव के लिए प्रयास

करती है। इसी भावना से प्रेरित होकर उसने अपने बंधनों को तोड़कर स्वावलंबी बनने का प्रयास किया होगा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) इस कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
उत्तर-
इस कविता के माध्यम से कवि ने आजादी के महत्त्व को बतलाने का प्रयास किया है। इसमें कवि ने बताने का प्रयास किया है कि आजादी के साथ आने वाली जिम्मेदारियों का अहसास हमें होना चाहिए। स्वतंत्र होना सभी को अच्छा लगता है लेकिन स्वतंत्रता का सही उपयोग कम ही लोग कर पाते हैं। इतना ही नहीं आज़ाद होने पर व्यक्ति को आत्मनिर्भर होना पड़ता है। आज़ादी पाने के बाद हमें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरों पर आश्रित नहीं रहा जा सकता। अतः आजादी के बाद आत्मनिर्भर होना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त अपनी आज़ादी को बनाए रखने के लिए कोशिश करते रहना पड़ता है।